Research Paper | E-ISSN : 2455-295X | Volume : 2 | Issue : 1 | Jan 2016

शिल्पगत वैशिष्ट्ता

डॉ. सुशीला कुमारी [1]

[1] हिन्दी विभाग

ABSTRACT

Key words:

फणीश्वर नाथ रेणु का साहित्य - संसार अव्यंत समृद्ध एवं सम्प्रेषणीय है। उनकी समृद्धि एवं सम्प्रेषणीयता में उनकी भाषा और शिल्पगत वैशिष्ट्य का बहुत बड़ा योग्यदान इस प्रकार है:-

1. कथानक - विन्यास:- रेणु का कथानक - विन्यास एकदम निजी है। नई कहानियों के सारे कहानीकारों से अलग प्रकार का इनका कथानक - विन्यासै। नई कथानक - विन्यास के क्षेत्र में कुछ नये आयाम उद्घटित किए है। यह विन्यास पिछली कहानियों के विन्यास से बहुत दूर तक अलग है। प्रेमचंद से पूर्व की कहानियों के कथानक घटना मूलक और यांत्रिक से है। वहाँ एक निश्चित उदेश्य की प्राप्ति के लिए कुछ घटनाओं का नियोजन कर दिया जाता है। और वे घटनाएँ कोतुहल बढ़ाती हुई इस उदेश्य को अन्त में खोल देती है। उन घटनाओं के साथ न तो जीवन्त परिवेश होता है और न जीवन्त चरित्रों से उनकी टकराहट होती है।

रेणु के कथानक - विन्यास में पूर्वदीप्ति पद्धति का बड़ा महत्त्व है अर्थात् वह कथा को समय के एक सीधे क्रम में उपस्थित नहीं करता बल्कि समय - समय पर अतीत को वर्तमान के बिन्दु पर ले आता है। और अतीत वर्तमान के संयोग से वह एक जटिल और संक्रांत परिस्थिति या मनः स्थिति की सर्जना करता है। इससे कहानी की संवेदना अधिक गहरी और संक्रांत हो उठती है। 'तीसरी कसम' में इस पद्धति का प्रयोग दर्शनीय है, जिसका संकेत किया जा चुका है। पुराने कथाकारों की तरह रेणु आकस्मिक घटना - विधान से काम नहीं लेते अर्थात उनके कथानक विन्यास में संयोग से घटित होने वाली घटनाएँ नहीं है। इसके कथानक की सहजता और यथार्थ और भी शक्ति पा लेती है।

शैली - रेणु की कहानी शैली निजी है। इसे भी किसी बने बनाए खाने में नहीं डाल सकते। रेणु ने कथा कहने की प्रायः सभी शैलियों का प्रयोग किया है। लफड़ा, 'दस गज जमीन' के इस पार उस पर, अग्नि संचारक, एक कहानी का सुपात्र, शीर्षहीन, रेखाएँ वृत चक्र, आदि कहानियाँ आत्म कथा शैली में है तो तीसरी कसम, लाल पान की बेगम, रसप्रिया, तीर्थोदक, सिरपंचमी का सगुन, मितिचित्र की मंयूरी, एक आदिम रात्रि की महक आदि कहानियाँ इतिहास शैली में है। शैली कोई भी हो रेणु का कथा कहने का अंदाज अपना है। वे किसी भी शैली को सपाट ढंग से ग्रहण नहीं करते, बल्कि कई शैलीयों का परस्पर संग्रचित करके एक नई शैली बना देते है। इतिहास शैली की कहानियाँ प्रायः वर्णनात्मक होती है।

पूर्व दीप्ति शैली - कथानक - विन्यास की पहचान करते समय पूर्व दीप्ति के प्रयोग का अवलोकन किया जा चुका है और यह परखा जा चुका है कि पूर्व दीप्ति - शैली कहानी के विन्यास को कथासूचक और संवेदना मूलक जटिलता और गहराई प्रदान करती है। यह अतीत को बार - बार उपयुक्त अवसरों पर वर्तमान के संदर्भ का स्पर्श पाकर पुनः जीवन्त हो उठता है। पूर्वदीप्ति का प्रयोग चेतना - प्रवाह को खोल देता है।

संवाद - रेणु की कहानियों की चर्चा करते हुए कहा जा चुका है कि ये इतिहास शैली और आत्म कथा शैली दोनों से लिखी गई है। किन्तु

किसी भी ढाँचे में बँधती नहीं है। इनमें वर्णन भी है, चित्रण भी है, नाटकीयता भी है और डायरी शैली का भी संस्पर्श है। कहानियाँ चाहे इतिहास शैली की हो, चाहे आत्मकथा शैली की, उनमें वर्णन, चित्रण और नाटकीयता का अद्‌भुत सामांजस्य लक्षित होता है। वह अपनी ओर से लम्बा - चैड़ा विवरण नहीं देता, विस्तार से वर्णन करता है।

भाषा - नई कहानी के कहानीकारों ने विभिन्न - अनुभूतियों परिवेशों के जीवन - यथार्थ की अपनी कहानियों में चित्रित किया है। इससे वे अपने को यथार्थ के किसी बने - बनाये खाने में नहीं डाल सकते उन्होंने किसी प्रकार के फार्मूले से कहानी रचने के स्थान पर अपने अनुभव में उठते हुए यथार्थ महत्व दिया है। इसलिए उनके यथार्थ में परिवेशगत जीवन का बड़ा ताजा और प्रमाणिक चित्र मिलता है।

शब्द प्रयोग:- रेणु की कहानियों मैं भाषा का प्रयोग जिस ओर से होता है उस ओर के अनुकुल शब्दों का विधान होता है। वर्णन के स्तर पर लेखक स्वंय भाषा बोलता है। ऐसे अवसरों पर भाषा लेखक की होती है। और पात्रों तथा परिस्थितियों के अनुकूल शब्दों का विधान करता है। लेखक की भाषा चाहे जिस रंग की हो, उसका रूप खड़ी बोली का टकसाली रूप ही होता है और उसके द्वारा प्रयुक्त शब्द चाहे तत्सम हो, चाहे तद्भव, चाहे उर्दू का हो, चाहे अंग्रेजी के, खड़ी बोली के स्वीकृत शब्द ही होते है।

वाक्य - विन्यास:- सामान्य वर्णनों में कथा - साहित्य का वाक्य - विन्यास गद्य का सीधा मान्य - वाक्य विन्यास होता है। 'रेणु' के कथा - साहित्य में भी वर्णनों की भाषा में वाक्य - विन्यास सीधा ही है। लेकिन संवादो में पात्रों के संस्कार मनः स्थितियों और संदर्भो के अनुकूल वाक्य - विन्यास में सीधेपन के स्थान पर वक्रता या क्रमविपर्याता आ जाता है। अर्थात् वाक्य नाटकीय भंगिमा प्राप्त कर लेते है। कहीं अधूरे वाक्य से ही पूरे वाक्य का काम लिया जाता है। कही - कहीं एक - एक शब्द से पूरा - पूरा वाक्य व्यंजित किया जाता है।

मुहाबरे:- गाँव के पात्र प्रायः अपनी बात - चीत में मुहाबरों और लोकोक्तियों का प्रयोग करते है। 'रेणु' ने उन संवादों में आवश्यकतानुसार मुहाबरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है और साथ - ही - साथ ऐसे अनेक वाक्यों का प्रयोग किया है जो मुहाबरे तो नहीं है, लेकिन जिनका प्रयोग गाँव के लोग मुहाबरे की तरह करते है। जैसे - गोबर की ढेरी से कौन ढेला फेंके, आगे नाथ न पीछे पगहिया।

ध्वनियाँ:- 'रेणु' की यह एक बड़ी विशेषता है कि उन्होंने व्यक्तियों वस्तुओं, अनेकानेक प्राणियों, गतियों आदि की ध्वनियों को खूब गहरी पहचान की है। इनके उपन्यासों में तो ध्वनियों का अजयबधर दिखाई पड़ता है। जहाँ ये ध्वनियाँ क्रिया - कलापों, वस्तु और प्राणियों की गतियों और स्वरों की मूर्त कर एक प्रभावशाली बिम्ब प्रस्तुत करती है। वहीं अपने अतिरेक में एक पद्धति या यांत्रिक पद्धति भी बन जाती है। जैसे - टि - टि - टि, धन - धन - धन, धड़ाम, छि - ई - ई - छक्का बिम्ब प्रतीक और अलंकार - 'रेणु' के उपन्यासी और कहानियों में काव्यात्मकता का गहरा स्पर्श दिखाई पड़ता है। इसलिए रेणु की भाषा स्पष्ट सपाट, वर्णनात्मक न होकर बिम्बात्मक और प्रतीकात्मक ही उठती है और नये प्रभावशाली अप्रस्तुत भी लक्षित होते है। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि ये बिम्ब प्रतीक, उप्रस्तुत परिवेश के बीच के होते है इसलिए इतने निकट के लगते है। और इतना गहरा प्रभाव छोड़ते है। जैसे तीसरी कसम कहानी में बैलगाड़ी की यात्रा के क्रम में अनेक बिम्ब उभरते हैं। कुछ बिम्ब अतीत के है कुछ वर्तमान के है। हिरामन गाड़ी हांक रहा है और पीछे हीराबाई बैठी हुई है। हिरामन न उसे देखता है और न उसे जानता है। केवल एक महक का स्पर्श अनुभव कर रहा है। उसने हीराबाई के अदृश रूप, हिरामन पर उसके प्रभाव को एक संशिलष्ट बिम्ब के माध्यम से व्यक्त किया है। इतना ही नहीं वर्तमान के बिम्ब अतीत के बिम्ब भी जुड़ता चला जाता है।

उच्चारण:- परिवेश विशेष के लोग कुछ शब्दों का उच्चारण एक विशेष प्रकार से करते है। 'रेणु' ने उन उच्चारणों के अनुसार ही बहुत से शब्दों का प्रयोग किया है। उच्चारण का यह अन्तर पढ़े - लिखे पात्रों की भाषा में नहीं है, बल्कि अनपढ़ पात्रों की भाषा में दिखाई पड़ता है। जैसे:- पंचलाईट या पंचलैट (पैट्रौमेक्स) लामनगर (रामनगर) फेनुगिलास (फोनोग्राफ) आदि।

इस प्रकार 'रेणु' की भाषा का अपना रंग तो है ही उसने हिन्दी भाषा की सर्जनात्मकता को बहुत समृद्ध किया है।

REFERENCES

[1] तीसरी कसम, मेरी प्रिय कहानियाँ - पृष्ठ - 28
[2] रस प्रिया, मेरी प्रिय कहानियाँ - पृष्ठ - 09
[3] हिन्दी उपन्यास - पृष्ठ - 49
[4] नेपाली क्रांति कथा - पृष्ठ - 07
[5] अग्निखोर - पृष्ठ - 54
[6] परती परिकथा - पृष्ठ - 56